

5. साधु° 3,2,4. अति° 1,6,18. सु° KATHÁS. 32,191. 46,151. अ° RAGH. 16,7. Spr. 3183. अनिर्वृत्य absol. BHĀG. P. ed. Bomb. 9,14,34. = मत्कृ-
तां निर्वृतिमप्राप्य Comm. — Nach ÇABDĀRTHAK. bei WILSON soll निर्वृत्त
n. Haus bedeuten. — Vgl. निर्वृत्ति. — caus. abwehren PRAB. 81,7.

— परि bedecken, umringen; zurückhalten, hemmen: वृत्रिवांसं परि
देवीरेदेवम् RV. 3,32,6. नैनमकूः परि वरदघायोः 4,2,9. परि वामरुपा
वैषी घृणा वरत्त घ्रातपः 5,73,5. तम् — परिवव्रुस्तपस्विनः umringten
MBh. 1,3,3,938. 7,4767. R. GORR. 2,39,39. 4,23,1. PAÑKĀT. 63,21.
°वृत्य R. 6,81,7. KATHÁS. 43,291. PAÑKĀT. 233,5. partic. 1) परीवृत RV.
1,144,2. गोत्रा 2,17,1. तमसा 23,18. 10,133,6. राधस् 7,27,2. AV. 10,
8,31. 12,3,2. 17,1,28. AIR. Br. 8,23. मृगान् (eine Art von Elephanten)
हिरण्येन परीवृतान् bedeckt Bhāg. P. 9,20,28. कोपपरीवृतात्तरं erfüllt
von Verz. d. Oxf. H. 260, a, N. Z. 3. तमस् umgebend RV. 4,43,2. — 2)
परीवृत bedeckt, umgeben ÇAT. Br. 1,1,2,21. 11,4,4,11. AIR. Br. 2,2.
रथ bezogen P. 4,2,10. H. 734. सुवर्णाकिङ्किणीपरिवृत्तोरस्क umhangen
PAÑKĀT. ed. orn. 4,8. verhüllt MBh. 13,1447. मृत्पिण्डो जलरेखया um-
geben Spr. 2243, v. l. दीपिकाभिः VIKR. 44. VARĀH. BRH. S. 21,14. 34,51.
84. BHĀG. P. 3,32,9. पुत्रामात्य° ĀCV. ÇR. 10,6,10. भृत्विः JĀGĀ. 1,114.
359. MBh. 2,1628. 3,1726. 5,6098. R. 1,51,21. 2,14,26. 34,10 (35,8
GORR.). 30,19. MRĀKĪH. 137,8. RAGH. 1,37. ÇĀK. 112,14, v. l. MĀLAY. 70,
23. VARĀH. BRH. S. 44,26. PRAB. 107,4. PAÑKĀR. 4,1,45. PAÑKĀT. 48,22.
VET. in LA. (III) 6,5. अपरिवृतं धान्यम् nicht eingehegt M. 8,238. 240. —
Vgl. परिवार, परिवृत fg., अपरिवृत, नित्यपरिवृत. — caus. umgeben,
umfassen, umringen: भोगेभिः AV. 11,9,5. तमसा 10,19. उच्छ्रुपिभ्यो
ऋदिः KĀTJ. ÇR. 8,3,27. 6,12. GOBH. 4,2,2. LĀTJ. 5,8,15. शर्वपैः MBh.
3,12127. 5,5961. रथत्रातेन 5962. परिवार्यामृतं तस्थुः umstanden 1,1428.
रणाग्निरम् 3,7112. पुरोम् HARIV. 4999. गिरिं परिवार्यं प्रदक्षिणम् 3819.
शयानं शुकुताः समन्तात्पर्यवारयन् MBh. 1,2947. 5154. 3,21 (med.). 14,
1827. 17,27 (wo पर्यवारयन् st. पर्यरावयन् zu lesen ist). 28. R. 1,5,2. 2,
87,7. 92,14 (101,16 GORR.). R. GORR. 2,93,28. 108,28. 3,62,30. 4,23,
18. Spr. 2857. KATHÁS. 12,20. 13,39. RĀGA-TAR. 5,79. तान्परिवार्यावत-
स्थिरे MBh. 1,5770. तं परिवार्योपविशुः 3,464. 4,793. 3,6060. 7229.
7298. R. 1,36,10. 2,34,13. R. GORR. 1,37,11. 6,2,35. 81,7. KATHÁS. 28,
29. स्वबद्धभिः परिवार्यं (°धार्य ed. Bomb.) umfassend MBh. 3,7229. प-
रिवारितं bedeckt mit, gehüllt in (instr.): अन्नैः 3,2037. वैयाघ्र° 2,1854.
7,268. परिखा° (निवेश) umgeben von R. 2,80,18. वेदिका° (उत्पान) R.
GORR. 2,87,16. शङ्कुभिस्तीक्ष्णैः सर्वतः परिवारितः (परिघः) 3,32,12. श-
कुतैः MBh. 1,2949. ब्रह्मर्षिभिः 7681. 2,1629. 3,2606. 4,616. 3,7052. 8,
2301. R. 2,84,12. R. GORR. 2,2,35. 123,19. 6,3,9. KĀM. NĪTIS. 6,1. ÇIÇ.
9,31. Spr. 2286, v. l. KATHÁS. 6,67. 12,54. 20,90. RĀGA-TAR. 1,292. 4,
590. BHĀG. P. 5,20,40. MĀRK. P. 37,14. PAÑKĀT. 43,5. — Vgl. परिवारण.

— अभिपरि, कोपेनाभियरीवृतः von Zorn erfüllt R. 7,38,22.

— संपरि umgeben, umringen: संपरीवृत AV. 10,2,33. यूथपैः संपरि-
वृता R. 6,21,6. — caus. dass.: युधिष्ठिरं संपरिवार्यं — उपाविशन् MBh.
3,10234. 4,2111. 6,2586. 2670. 7,5839. 8,3808. R. GORR. 2,67,25. 3,
28,33. वानरैः — लङ्का संपरिवारिता 6,37,91. सीरेदेन MBh. 6,410.

— प्र abwehren: दूधेभिः प्रवृषोति भूयसः RV. 7,82,6. 9,21,2. प्रवृता
KATHÁS. 103,169 fehlerhaft für प्रावृता. Vgl. 2. प्रवर, 2. प्रवरण, प्रवार

und प्रा. — caus. abwehren MBh. 3,10476. 6,2809.

— प्रति caus. Jmd zurückhalten, abhalten, abwehren, Jmd wehren MBh.
3,12119. 4,1821. 1896. 5,7128. 6,516. 7,1109. 8,1090. HARIV. 676. 6789.
R. 3,49,22 (so v. a. abweisen, widersprechen). 4,33,3. BHATT. 17,49.
शिलावर्षं शर्वर्षेण R. 1,28,16. MBh. 3,12217. प्रतिवारित 16643. R. 5,
36,87. MĀLAY. 11. विवेशाप्रतिवारितः R. GORR. 2,17,3. 32,37. M. 8,
360. n. Verbot: एतत्प्रतिवारिते R. 7,45,20. — Vgl. प्रतिवार fg. und
प्रतिवार्य.

— वि 1) aufdecken, eröffnen, öffnen; daher (das Dunkel) erhellen;
offenbaren, kundthun; häufig im Veda mit Dehnung आवृ und im
Saṁdhi आवो RV. PRĀT. 1,23. AV. PRĀT. 2,44. ज्योतिषा वि तमो व-
वर्ध RV. 1,91,22. 62,5. 7. व्यस्मदा काष्ठा अर्धते वः 63,5. गावो न व्रतं
व्युषा आवर्तमः 92,4. 113,4. 9. 13. 5,45,1. 6,44,8. 4,1,15. वि यद्वरंमि
पर्वतस्य वृषवे 21,8. 31,2. 5,31,3. 6,62,11. 7,90,4. व्यावर्द्व्या मृतिं वि
रुतिं मर्त्येभ्यः 8,9,16. वि नो रापे डुरो वृधि 9,43,3. 97,38. VS. 13,3 (P.
2,4,80, Sch.). 20,36. ÇAT. Br. 7,4,4,14. 11,1,4,2. द्वारं व्यवारिषम् 3,2,
7. अङ्गुल्या मध्ये विवृषोति KĀTJ. ÇR. 7,7,21. 10,7,4. — नाकारणं वि-
वृषुणात्बद्धम् das Schwert entblößen VARĀH. BRH. S. 50,6. कामं तु मे मा-
रुतस्तत्र वासः प्रक्रीडिताया विवृषोतुं öffnen MBh. 1,2935. विवृणु स्व-
मोकः BHĀG. P. 8,24,53. मञ्जूषां विवृतवान् KATHÁS. 13,49. द्वारं विवृत्य
30,183. द्वारः स्वयं व्यवर्षत् öffneten sich von selbst BHĀG. P. 10,3,50.
विवृषोति मुखं यावत्तस्य KATHÁS. 73,7. वक्तं व्यवृणुत (den eigenen Mund)
R. 5,8,8. यस्तु कर्षो विवृणुते 6,2,36. विवृत्य नयने die Augen aufreißend
5,24,22. 36,85. MBh. 1,6275. ममाप्येतद्दृदि संपरिवर्तते । अभिप्रायस्य
पापवान्वैवं तु विवृणोम्यहम् offenbaren, kund thun MBh. 1,5687. 6952.
R. 2,73,27. RAGH. 19,40. MĀLAY. 43. KUMĀRAS. 3,68. RĀGA-TAR. 1,132.
3,185. BHĀG. P. 3,9,20. 24. Verz. d. Oxf. H. 130, b, 18. 136, a, No. 239.
BHATT. 7,73. विवृणुः KUMĀRAS. 3,35. RAGH. 6,85. विवृणुवाना पुरातनम्
MBh. 13,818. DAÇAK. 133,2. तथागतज्ञानं विवृणुः SADDH. P. 4,28, b. वि-
वृतवान् KATHÁS. 72,211. विवृरितुमात्मनो गुणान् Spr. 1823. धातुपाठं वि-
वृरितुम् erklären, commentiren Verz. d. Oxf. H. 173, b, No. 398. विवृत
aufgedeckt, entblösst MBh. 1,2942. DAÇAK. 90,11. वसुधां विवृतामधिरोरते
auf der nackten Erde MBh. 11,457. प्रसुप्तश्चामि विवृते (so mit der neu-
eren Ausg. zu lesen) dass. HARIV. 4823. तथा तैरवकीर्णस्य दिव्यैरस्त्रैः
समस्ततः । न तस्य द्यङ्गुलमपि विवृतं संप्रदृश्यते unbedeckt, frei von Wun-
den MBh. 4,2027. अविवृतश्चरामि verborgen, ungekant BHĀG. P. 5,12,
15. एकाग्रः स्याद्विवृता नित्यं विवृदर्शकः seine Blüten nicht zeigend
Spr. 3833. geöffnet, offen: पात्रं ĀCV. GRHJ. S. 53 bei STENZLER. सन्नं
KĀTHOP. 2,13. मुञ्ज, आस्य, वक्त MBh. 3,12931. R. 5,8,10. 36,25. ÇĀK.
7. KATHÁS. 18,324. HIT. 76,6. सर्व उष्माणो ऽग्रस्ता निरस्ता विवृता (so
ist zu lesen; = विवृतप्रयत्नेपताः ÇĀK.) KĀND. UP. 2,22,5. काण्ठस्य खे
विवृते संवृते वा RV. PRĀT. 13,1. उष्माणो विवृतं च AV. PRĀT. 1,31. 34
(°तम). Ind. St. 4,118. fgg. Schol. zu P. 1,1,9. 8,4,68. द्वारं R. 2,67,16.
R. GORR. 2,99,4. KUMĀRAS. 4,26. RĀGA-TAR. 6,7. विल R. 4,51,37. 32,
7. 37,21. गर्तं MĀRK. P. 21,9. आश्चर्यमिव पश्यामि यस्यास्ते वृत्तमीदृशम् ।
आचरन्त्या न विवृता सद्यो भवति मेदिनी ॥ dass sich die Erde nicht auf-
thut R. 2,33,12. तस्याः शरीरं विवृतं प्रविश्य R. GORR. 1,47,17. शतधा
विवृतं कवचम् 3,34,18. शोकसागर 4,22,14. संसारवर्त्म विवृतं कः पिधातुं